विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय
रूपम कुमारी ,वर्ग-दशम्, विषय-हिन्दी 🌷🌷
दिनांक- ५/७/२०.

||अध्ययन-सामग्री ||

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:
गुरुर्साक्षात् परंब्रह्म् तस्मै श्री गुरुवे नम:
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

गुरुपूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं ! यह बात सौ फ़ीसदी सही है कि हम सबके अंदर एक गुरु-शक्ति विराजमान होता ,जो हमें हर पल निर्देशित करता है , लेकिन भ्रमवश हम उसकी शक्ति तथा उसके निर्देशों का बोध नहीं कर पाते । क्योंकि हमारी सारी प्रवृत्ति

यहाँ बाहर की ओर मुड़ी रहती हैं ,जिससे हम अपने अंदर की दुनिया को देख पाते हैं । बस, इसी आंतरिक दुनिया में प्रवेश करने की राह बचाने वाले हमारे आध्यात्मिक गुरु होते हैं । हम शत-प्रतिशत श्रद्धा और विश्वास रखें तो यह हमें हमारे आंतरिक गुरु से भेंट कराते हैं ।

पठन-पाठन:.

।। बालगोबिन भगत का शेषांश .....

उनका बेटा बीमार ,

इसकी खबर रखने के लोगों को कहां फुर्सत !किंतु मौत तो अपनी ओर ध्यान खींच कर ही रहती हैं !हमने सुना ,बालगोबिन भगत का बेटा मर गया । कुतूहलवश उनके घर गया !देखकर दंग रह गया !बेटे को आंगन में एक चटाई पर लिटा कर एक सफेद कपड़े से ढक रखा है !वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते,उन फूलों में से कुछ फूल उस पर बिखरा दिए गए हैं ;फूल और तुलसी दल भी । सिराहने में चिराग जला रखा है और उसके सामने जमीन पर ही आसन जमाए गीत गाए जा रहे हैं वही पुराना स्वर-, वही पुरानी तल्लीनता !घर में पतोहू रो रही है, जिसे गांव के स्त्रियां चुप कराने की कोशिश कर रही है ,। किंतु, भगत गाए जा रहे हैं । हाँ , गाते- गाते कभी-कभी पतोहू के नजदीक भी जाते और उससे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते !आत्मा परमात्मा के पास चली गई ,विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली ।, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात हो सकती ?मैं कभी-कभी सोचता वह पागल तो नहीं हो गए । किंतु नहीं ,वह जो कहा करते थे उसमें विश्वास बोल रहा था -वह परम विश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है ।.

विशेष: बालगोबिन भगत बेटा के मरने के बावजूद भी रोए नहीं ; क्योंकि ,वह आत्मज्ञानी थे । उन्हें यह ज्ञात था कि आत्मा की -कभी मृत्यु नहीं होती ;वह सिर्फ अपनी स्वरूप बदलती है । इसलिए ,मृत्यु एक उत्सव के समान है । उन्हें यह पता था कि जन्म -जन्मांतर से आत्मा अपने प्रेमी परमात्मा (ईश्वर) से मिलने को बेकरार रहती है ,फिर मिलन में शोक कैसा ! यह दृढ़ विश्वास ही उन्हें मृत्यु के भय से भयभीत नहीं कर पाया

<u>पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ें व समझें ।</u>